Educational Trend (A Journal of RIE, NCERT, Ajmer), Volume 1, Issue 1, January 2020
ISSN: 2583-6269

विरह वेदना की अमर गायिकाः महादेवी वर्मा

राम निवास
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, अजमेर
Email: dessh.rieajmer@gmail.com

सारांश

महादेवी की कविताओं में एक रहस्यात्मक प्रवृत्ति मिलती है। उस रहस्यात्मक प्रवृत्ति को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए उनके विरहगीत को समझना भी आवश्यक हो जाता है। अतः इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए इस पत्र में महादेवी वर्मा की विरह कविताओं और उसमें जीवन मर्म को उद्घाटित किया गया है।

प्रमुख शब्दः विरह वेदना, छायावाद, रहस्यवाद, आत्मसमर्पण का भाव।

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार आधार स्तंभों में से एक हैं। जय शंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा ने छायावादी काव्य धारा को समृद्ध किया है। महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना और करूणा का भाव बहुत पाया जाता है, जो कवयित्री के व्यक्तित्व को ही प्रतिबिम्बित करता है। यह उनके काव्य की मुख्य प्रवृत्ति है उनके जीवन की निजी अनुभूतियाँ ही उनकी कविताओं में विरह वेदना बनकर प्रकट हुई हैं। अपनी विरह वेदना के संबंध में उन्होंने लिखा है– "सुख और दुख के धूप छाँही डोरों से बने जीवन में मुझे केवल दुख ही गिनते रहना क्यों इतना प्रिय है, यह बहुत लोगों के लिए आश्चर्य का कारण है... संसार जिसे दुख और अभाव के नाम से जानता है वह मेरे पास नहीं है। जीवन में मुझे बहुत दुलार, बहुत आदर और बहुत कुछ मात्रा में सब कुछ मिला है। परंतु उस पर पार्थिव दुख की छाया न पड़ सकी कदाचित यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी है। इसके अतिरिक्त बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति एक भक्तिमय अनुराग होने के कारण, उनकी संसार में दुखात्मक समझने की फिलासफी से मेरा असमय ही परिचय हो गया था।" उन्हें आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है।

महादेवी वर्मा के काव्य में दुख, पीड़ा, करूणा और वेदना का साम्राज्य है। वे मूलतः विरह और वेदना की कवयित्री हैं। हृदय की सूक्ष्मतम भाव लहरियों को उन्होंने पूरी तन्मयता के साथ उकेरा है। उनकी वेदना के दो पक्ष हैं प्रथम दुख और दूसरा आँसू । उनकी वेदना अनुभूति उनके आंतरिक विरह भाव से उत्पन्न है। दुख को यदि उनकी वेदना का अनुभूति पक्ष माना जाए तो आँसू उसका बाहरी दृश्य प्रगटीकरण है।

1. वेदना की अभिव्यक्तिः महादेवी वर्मा और मीरा के काव्य में वेदना और विरह पीड़ा के कारण समानता दिखाई देती है। मीरा ने 'अविनाशी पति के साथ अपना प्रणय संबंध स्थापित करके उसे दाम्पत्य संबंध के रूप में बदल दिया। प्रियतम से इतनी निकटता, घनिष्टता, तरलता, आतुरता और विरह पीड़ा की जो धारा मीरा ने बहाई है उसके स्मरण मात्र से हृदय से करूणा प्रवाहित होने लगती है। मीरा ने अपने 'अँसुवन जल सींच प्रेम बेल बोई थी। ठीक ऐसे ही महादेवी ने भी अपने 'अविनाशी'प्रियतम के विरह में आँसुओं की बौछार की है–

आँसुओं का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल।
तरल कण कण से बने घन सा क्षणिक मृदु गात।
जीवन विरह का जलजात।।
अश्रु से कण कण लुटाता आता यहाँ मधुमास।
अश्रु ही की हाट बन आती करूण बरसात।
जीवन विरह का जलजात।। (वर्मा, 1951)

अनंत असीम और अदृष्ट प्रियतम के प्रेम में मीरा और महादेवी आँसुओं की माला गूँथती हैं –

इन ललचाई पलकों पर
पहरा था जब व्रीड़ा का
साम्राज्य मुझे दे डाला
उस चितवन ने पीड़ा का
उस सोने के सपने को
देखे कितने युग बीते
आँखों के कोष हुए हैं
मोती बरसा कर रीते। (वर्मा, 1930)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि – "उस अज्ञात के लिए वेदना ही इनके हृदय का भाव केंद्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ छूट कर झलक मारती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया उसी के साथ वे रहना चाहती हैं, उसके आगे मिलन सुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं।" इस प्रकार उनकी विरह वेदना अलौकिक बन गई है।

2. प्रियतम का स्वरूपः महादेवी के प्रियतम शरीरधारी नहीं। इसलिए उनके प्रेम का आलम्बन कोई हाड़ मांस का पुतला नहीं है। उन्होंने अपने प्रियतम को विराट अनंत आदि नामों से संबोधित किया है। ये सभी नाम उस परमशक्ति विधाता के लिए ही है। वे अद्वैत दर्शन के आधार पर जीव ब्रह्म, जगत और माया पर स्थिर होकर अपनी आंतरिक चेतना को प्रणय के आधार पर प्रकट करती हैं। वे उस प्रियतम को रहस्यवादी प्रणय भावना के संबोधन से पुकारती हैं–

"तुम मुझ में प्रिय! फिर परिचय क्या?"
"क्या न अब प्रिय की बजेगी
मुरलिका मधुरता वाली।" (वर्मा, 1951)

महादेवी अद्वैत ब्रह्म को ही अपना प्रियतम मानती हैं। वह परम शक्ति जो अनंत चतेना संपन्न विराट और असीम है। जिसका विस्तार सृष्टि में सर्वत्र है। सभी आकार उसी में बनते और मिटते रहते हैं।

3. विरह की अनुभूति और अलौकिक प्रेमः महादेवी की प्रणय साधना अलौकिक है इसी आधार पर उनका आलम्बन भी अलौकिक है। वे अलौकिक आलम्बन की ओट में कहीं पर भी लौकिक श्रृंगार का वर्णन नहीं करती। उनके प्रेम में सांसारिक वासना की जरा भी गंध नहीं है। सुमित्रानंदन पंत जी का कथन है कि "महादेवी जी की काव्यानुभूति न तो मध्यकालीन कवियों के रहस्यवाद की देन है और न निजी जीवन के

परिणाम स्वरूप जन्मी है । वह नारी व्यक्तित्व की देन है। "महादेवी की प्रणयानुभूति सर्वोच्च भाव दशा की है। वे उस अलौकिक प्रियतम के लिए निरंतर प्रतीक्षारत भी हैं–

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
जो तुम आ जाते एक बार।। (वर्मा, 1951)

4. आत्म निवेदन और विरह वेदनाः मीरा की भाँति महादेवी ने भी अपने प्रियतम के दर्शन भगवान में किए हैं। स्वकीया नायिका की तरह उनकी आत्मा भी अपने प्रियतम के पथ में पलकें बिछाए हुए है। वे उस विश्वव्यापी प्रियतम को संबोधित कर अनेक प्रकार से प्रणय निवेदन करती हैं। वे बार–बार अपने प्रेम की याद दिलाती हैं–

जीवन विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास।
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।। (वर्मा, 1964)

सूफी संत जायसी ने भी अपनी सुप्रसिद्ध काव्य कृति 'पद्मावत'में प्रेम को सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त बताया है। ठीक ऐसे ही महादेवी की प्रणय साधना भी है। वे भी अपने प्रियतम को प्रकृति के कण–कण में देखती हैं। उनका प्रियतम समस्त विश्व में घट–घट में रम रहा है वे उसी के साथ तादात्म्य स्थापित करती हैं। उनकी आत्मा अपने आराध्य की अंतर्मुखी उपासना में लीन रहती है। अब तो कवयित्री का संपूर्ण जीवन ही उस अनंत असीम का मंदिर बन गया है –

क्या पूजा क्या अर्चन रे,
उस असीम का सुंदर मंदिर
मेरा लघुतम जीवन रे। (वर्मा, 1951)

5. विरह की मार्मिक अनुभूतियाँः महादेवी निरंतर विरह की मार्मिक और तीव्र अनुभूतियों से घिरी रहती हैं। उनका मन कभी भी संयोग श्रृंगार में नहीं रहता। उनके काव्य में सर्वत्र उस प्रियतम के बिछुड़ जाने की सूक्ष्म अनुभूति है। जो अगोचर असीम अनंत और अज्ञात तत्त्व है उसके साथ दुनियावी संयोग मिलन का आनंद नहीं प्राप्त किया जा सकता। ऐसा प्रियतम संसार सुख के योग्य नहीं है। जैसा प्रियतम होगा वैसी ही उसके साथ प्रणय अनुभूति संभव है। अतः यहाँ शाश्वत विरह का प्रगटीकरण है। अशरीरी सूक्ष्म प्रियतम को प्राप्त करने के लिए कवयित्री सदैव विरह में तपती है और वेदना से व्याकुल होती हैं। वह परम सत्ता प्रियतम से बिछुड़ कर भटक रही है–

रूप रेखा उलझनों में कठिन सीमा बंधनों में
जग बँधा निष्ठुर क्षणों में
अश्रुमय कोष कहाँ तू आ गई परदेशिनी री।।

कवयित्री का जीवन और विरह की पीड़ामय वेदना एकाकार हो गए हैं। अब जीवन में सिर्फ आँसू और निःश्वास ही है–

काल इसको दे गया, पल आँसुओं का हार
पूछता इसकी कथा निःश्वास ही में वात
जीवन विरह का जलजात।।

यह वेदनामय पीड़ा और निराशा महादेवी के हृदय और मन मस्तिष्क में रच और बस गई है। इसलिए वे अपना परिचय भी एक नीर भरी दुख की बदली के रूप में देती हैं–

मैं नीर भरी दुख की बदली।
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कोई कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी थी कल मिट आज चली।। (वर्मा, 1942)

ऐसे विरह की मार्मिक अनुभूतियाँ उनके काव्य में यत्र तत्र मिल जाती हैं।

6. वेदनामय करूणा का पगटीकरणः महादेवी की काव्य साधना में विरह वेदना और उससे प्रवाहित हुई करूणा का बहुत बड़ा भाग है। अपने प्रियतम के विरह में वे रोती तड़पती हैं और आँखों से आँसू बहाती हैं जिसके फलस्वरूप हृदय में करूणा का भाव उमड़ता है। वे अपने जीवन को विस्तार देती हुई पीड़ा रूदन और करूणा संबंध जोड़कर भी प्रसन्नचित्त रहती हैं। उनके हृदय की वेदना नेत्रों के रास्ते आँसुओं की बरसात के रूप में प्रकट होती है जो अनंत और अथाह है। वे वेदना के साथ एकरस होकर जीवन जीती हैं। जीवन रूपी दीपक विरह वेदना की बत्ती से करूणा के घी में जलता रहता है। जिससे आकर्षित होकर प्रियतम समीप आए –

मैं बनी मधुमास आली।
आज मधुर विषाद की घिर करूण आयी यामिनी।
बरस सुधि के इन्दु से छिटकी पुलक की चाँदनी।
उमड़ आयी री दृगों मे सजनि, कालिन्दी निराली।। (वर्मा, 1942)

परन्तु प्रियतम ऐसा है कि न तो दर्शन देता और न ही सामने आता। अब ऐसे प्रियतम को संदेश कैसे भेजा जाए–

अलि कहाँ संदेश भेजूँ
मैं किसे संदेश भेजूँ ?
एक सुधि अनजान उनकी
दूसरी पहचान उनकी
पुलक का उपहार दूँ
या अश्रु भार अशेष भेजूँ? (वर्मा, 1951)

वे अब विरह वेदना और पीड़ा से अलग होना ही नहीं चाहती। वेदना पीड़ा करूणा अब उनकी निधि है। वेदना एक साधना है। वे पीड़ा के कारण दुखी नहीं हैं। शिकायतें उठनी भी पूर्णतया बंद हो गई हैं–

पीड़ा में तुमको ढूँढा
तुममें ढूँढूँगी पीड़ा।

उनके काव्य में इसी वेदना पीड़ा के कारण करूणा भी है। जिसमें रोना धोना नहीं है बल्कि वह शांत और निर्मल है।

7. पूर्णतया आत्म समर्पण का भाव: पूर्णतया आत्म समर्पण के बिना समाधि फलित नहीं होती। महादेवी की विरह वेदना, पीड़ा में भी सर्वस्व समर्पण करने की भावना है। इसलिए वे अपना रोम–रोम और यहाँ तक कि प्रत्येक क्षण प्रियतम को समर्पित करने के लिए तत्पर हैं। अपना अहं गलाना, मिटा देना यह प्रत्येक मनुष्य जो अनंत असीम के साधक हैं उन्हें ही इसका अधिकार है। 'स्व'खत्म करने के मार्ग में कोई दुराव छिपाव नहीं है–

ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद।
क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करूणा का उपहार?
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार।

महादेवी के काव्य में प्रेम प्रणय साधना के अंतर्गत आँसू पीड़ा कसक टीस करूणा संबंधी विरह व्यंजना हुई है। प्रियतम से मिलने की उत्कट इच्छा भी उनके हृदय मन और मस्तिष्क में हिलोरें लेती हैं। स्मृतियों का आनंद ऐसा है कि साधक को अपना प्रियतम निकट ही दिखाई देता है। यहाँ कवयित्री अपने प्रिय के साथ शाश्वत संबंधों को स्वीकारती हुई कहती है–

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
दूर तुम से हूँ अखण्ड सुहागिनी भी हूँ। (वर्मा, 1951)

आधुनिक हिंदी साहित्य के उन्नायकों में महादेवी वर्मा का स्थान बहुत ऊँचा है। उनके काव्य साहित्य में पीड़ा करूणा और वेदना का साम्राज्य है जिसके कारण उन्हें दूसरों की पीड़ा और दुख के प्रति संवेदनशील बनाकर सहानुभूति से भर दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में– "गीत लिखने में जैसी सफलता महादेवी जी को हुई वैसी और किसी को नहीं। न तो भाषा का ऐसा स्निग्ध और प्रांजल प्रवाह और कहीं मिलता है, न हृदय की ऐसी भाव भंगिमा। " उनके काव्य में सर्वत्र गीतात्मकता मिलती है। गीति काव्य सर्वाधिक लिखा है। जिसमें स्वाभाविक भाव भंगिमा और लय है। उनकी भाषा दूसरे छायावादी कवियों के समान ही हिंदी खड़ी बोली है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है। उन्होंने भावात्मक गीत शैली को अपनाया है जिसमें कोमल कांत पदावली का प्रयोग द्य प्रगीत शैली के अंतर्गत उन्होंने विविध छंदों

का प्रयोग किया है। उनके छंदों की गति ने काव्य में संगीत लय और माधुर्य भर दिया है। अलंकार योजना के अंतर्गत देखें तो छायावादी परम्परा का निर्वाह करते हुए उन्होंने उपमा, रूपक, मानवीकरण, उल्लेख, अन्योक्ति अलंकारों का प्रयोग सफलता पूर्वक किया है। सांगरूपक उन्हें विशेष प्रिय है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा ने जो जीवन जिया है उसका प्रखर रूप उनकी कविताओं में मिलता है। जब वे कहती हैं कि 'मैं नीर भरी दुख की बदली'तो उसमें उस अज्ञात प्रियतम की वेदना का तीव्रतम रूप का प्रमाण है। उस अज्ञात के लिए महादेवी वर्मा के मन में एक तड़प दिखाई देती है। छायावादी कवियों की विरह वेदना से महादेवी वर्मा भिन्न दिखाई देती हैं। क्योंकि विरह रूप का चित्रण करने में उन्होंने काल्पनिक दृष्टि का नहीं बल्कि जीवन के यथार्थ पक्ष को प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* इलाहाबाद, भारतीय भंडार पृष्ठ 123.

वर्मा, महादेवी. (1930). *नीहार,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य प्रेस पृष्ठ 16.

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* इलाहाबाद, भारतीय भंडार पृष्ठ 133.

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* इलाहाबाद, भारतीय भंडार पृष्ठ 63.

वर्मा, महादेवी. (1964). *संधिनी,* इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ 55.

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* इलाहाबाद, भारतीय भंडार, पृष्ठ 177.

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* इलाहाबाद, भारतीय भंडार, पृष्ठ 211.

वर्मा, महादेवी. (1942). *दीपशिखा,* इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन, गीत संख्या 22.

वर्मा, महादेवी. (1942). *दीपशिखा,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ 147.

वर्मा, महादेवी. (1951). *यामा,* भारतीय भंडार, इलाहाबाद, पृष्ठ 131.